**'तेरा वर्ष'**

# आज्ञाकारिता सप्ताह

**02.06.2013**

**1. स्वमान** – मैं बाबा का राइट हैण्ड हूँ।

- शास्त्रों में दिखाते हैं कि ब्रह्मा की हजारों भुजाएँ थीं जिनके माध्यम से उन्होंने सृष्टि की रचना की...उन भुजाओं में से एक भुजा मैं हूँ जो सृष्टि के नवनिर्माण में उनकी मदद कर रहा हूँ...ये मेरा सौभाग्य है कि सृष्टि के आदि पिता ने मुझे अपनी भुजा बनाया...मुझे विश्व कल्याण के कार्य में लगाया...मैं बड़े ही कृतज्ञ भाव से पूर्णरुपेण उन्हें समर्पित हूँ...वो जैसा चाहें, जहाँ चाहें, जिस रुप में चाहें मेरा प्रयोग करें...मैं निमित्त हूँ, वो करनकरावनहार हैं...।

**2. योगाभ्यास –**

**अ**. मैं बाबा का राइट हैण्ड हूँ...सदा बाबा के साथ जुड़ा हुआ हूँ ...हर पल बाबा की हर शुभ आश को पूर्ण करने में तत्पर हूँ...बाबा ने कहा और मैंने किया...।

**ब**. मैं महावीर हूँ...जैसे महावीर हर पल श्री राम के चरणों में बैठे रहते थे और उनकी आज्ञा मिलते ही कार्य को पूर्ण करने के लिये निकल पड़ते थे...बड़े से बड़ा कार्य भी वे श्री राम की याद में सहज कर लिया करते थे और कार्य पूर्ण होते ही वापस श्री राम के चरणों में आकर बैठ जाते थे...उन्हें अपने बड़े-बड़े कारनामों का जरा भी गुमान नहीं था क्योंकि वो जानते थे कि करन करावनहार तो श्री राम हैं...उनके हृदय में सदा श्री राम का वास था...मैं ही वो महावीर हूँ...सदा अपने बाबा को दिल में बसाए हुए उनका आज्ञाकारी सपूत...।

**3. धारणा – आज्ञाकारिता**

- आज्ञाकारिता ऐसा गुण है जो किसी को फर्श से उठाकर अर्श पर बिठा देता है। आज्ञाकारी बच्चे माता-पिता और गुरुजनों के प्रिय होते हैं। ऐसे बच्चों पर वे अपना सबकुछ न्यौछावर कर देते हैं। यदि भगवान को राजी करना है, उसका दिल जीतना है तो उसकी हर आज्ञा का पालन करें। अवज्ञा करने से आप भगवान के दिलतख्त पर कभी नहीं बैठ पायेंगे और जो अभी भगवान के दिल पर नहीं बैठेंगे, वे कभी विश्व के तख्त पर भी नहीं बैठ पायेंगे।

**4. चिंतन** - भगवान का राइट हैण्ड अर्थात् क्या ?

- कौन बन सकते हैं भगवान के राइट हैण्ड ?

- राइट हैण्ड क्या करेगा और क्या नहीं ?

**5. तपस्वियों प्रति** – हे महान् तपस्वियों ! अपने भाग्य पर इठलाओ कि तुम्हें कौन मिल गया है। तुम ऐसे तपस्वी हो जिसे भगवान मिल गए हैं। दुनिया में जो तपस्वी तपस्या कर रहे हैं वो तो इसे स्वप्न में भी नहीं सोच सकते कि इस तरह भगवान को पाया जा सकता है। वो तो भगवान के क्षणिक दर्शन के लिये भी हजारों वर्षों की साधना को अनिवार्य मानते हैं। वे ढूँढ़ रहे हैं और तुम उनके साथ अपना जीवन व्यतीत कर रहे हो। तुम्हारा सवेरा भी उसके साथ होता है तो शयन भी उसके साथ। उसके हर चीज पर तुम्हारा अधिकार हो गया है। तुम भी उसके समान ही मास्टर भगवान बन गए हो। अब तुम अपने स्वरुप से भगवान को प्रत्यक्ष करो और वैसे ही कर्त्तव्य करो जैसा वो करता है।